## विचार बिन्दु

धन से हम जीवन की सारी सुख सुविधा तो हासिल कर सकते है,
पर जीवन में सुकून केवल अच्छे कर्मों से ही आता है।
- अरविन्द कटोच

# प्रकृति पर्यावरण और प्रदूषण

प्रकृति पर्यावरण और प्रदूषण एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति में कोई विकृति आएगी तो पर्यावरण बिगड़ेगा जिसका खामियाज़ा हमें प्रदूषण के रूप में उठाना होगा। इन तीनों में सामंजस्य हुआ तो मनुष्य को बेहतर जीवन जीने का अवसर मिलेगा। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। मानव के मनुष्य के जन्म के साथ ही उसका प्रकृति से निकट का सम्बन्ध जुड़ जाता हैं। प्रकृति अपनी चीजों का उपभोग स्वयं नहीं करती। हमारी आधारभूत जरूरतें जैसे हवा, पानी, भोजन आदि सभी प्रकृति से ही प्राप्त होते है साथ ही प्रकृति ने हमें कई प्रकार के फूल, पक्षियां, पशु, पेड़ पौधे, नीला आकाश, ज़मीन, नदिया, समुद्र, पहाड़, प्रदान किया है। जिससे मनुष्य एक बेहतर और अच्छा जीवन व्यतीत कर पाता है। यह कहा जा सकता है प्रकृति ही मानव का पोषण करती आई हैं। मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यदि मनुष्य प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करता रहा तो प्रकृति भी एक दिन इंसान के वजूद के साथ छेड़छाड़ शुरू कर देगी । मनुष्य का यह शरीर भी प्रकृति के पाँच तत्वों से मिल कर बना है, वायु, अग्नि, जल, आकाश, मिट्टी और फिर यह प्रकृति हीं इस शरीर को वापस अपने में मिला लेती है। हम पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को जारी रखना चाहते हैं तो प्रकृति का संतुलन हर हालत में बनाये रखना होगा। यदि प्रकृति के अनुरूप हमने अपने आप को ढ़ाल लिया तो ठीक नहीं तो अस्तित्व समाप्त होने का खतरा उत्पन्न हो जायेगा।

प्रकृति व पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं। प्राकृतिक संपदाओं के महत्व को समझना, उनका किफायती उपयोग करना, उनके संरक्षण को प्राथमिकता देना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। जल, जंगल और जमीन प्रकृति के तीन प्रमुख तत्व हैं जिनके बगैर हमारी प्रकृति अधूरी है। प्रकृति के इन तीनों तत्वों का इस कदर दोहन किया जा रहा है कि इसका सन्तुलन डगमगाने लगा है। प्रकृति के साथ हम बड़े पैमाने पर छेड़छाड़ कर रहे हैं, यह उसी का नतीजा है कि पिछले कुछ समय से भयानक तूफानों, बाढ़, सूखा, भूकम्प जैसी आपदाओं का सिलसिला तेजी से बढ़ा है। हम प्रकृति की चिंता नहीं करते और यही वजह है कि प्रकृति ने भी अब हमारी चिंता छोड़ दी है। हमनें बिना सोचे समझे संसाधनों का दोहन किया है। यही वजह है कि अब पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है और बाढ़, सूखा, सुनामी जैसी आपदाएं आ रही हैं। बरसों से पर्यावरण को हम इंसानों ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। प्रकृति से साथ इंसान का लगातार खिलवाड़ एक भयानक विनाश को आमंत्रण दे रहा है, जहां किसी को बचने की जगह नहीं मिलेगी। जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं। प्रकृति पर मंडराता खतरा जस का तस बना हुआ है। सबसे बड़ा खतरा तो इसे ग्लोबल वार्मिंग से है। धरती के तापमान में लगातार बढ़ते स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते है। वर्तमान में ये पूरे विश्व के समक्ष बड़ी समस्या के रुप में उभर रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण का ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। इसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे प्रकृति पर खतरा बढ़ता जा रहा है। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा।

**प्रकृति व पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं। प्राकृतिक संपदाओं के महत्व को समझना, उनका किफायती उपयोग करना, उनके संरक्षण को प्राथमिकता देना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। जल, जंगल और जमीन प्रकृति के तीन प्रमुख तत्व हैं जिनके बगैर हमारी प्रकृति अधूरी है। प्रकृति के इन तीनों तत्वों का इस कदर दोहन किया जा रहा है कि इसका सन्तुलन डगमगाने लगा है। प्रकृति के साथ हम बड़े पैमाने पर छेड़छाड़ कर रहे हैं, यह उसी का नतीजा है कि पिछले कुछ समय से भयानक तूफानों, बाढ़, सूखा, भूकम्प जैसी आपदाओं का सिलसिला तेजी से बढ़ा है।**

प्रकृति के संरक्षण का अर्थ है कि वनों,भूमि,जल निकायों का संरक्षण और खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों आदि जैसे संसाधनों का संरक्षण, यह सुनिश्चित करने के लिए किये सभी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहें। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो आसानी से किए जा सकते हैं और एक बहुत बड़ा बदलाव ला सकत हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है।

इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं। प्रकृति के संरक्षण से अभिप्राय जंगलों, भूमि, जल निकायों की सुरक्षा से है तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों जैसे संसाधनों की सुरक्षा से है जिससे यह सुनिश्चित हो सके किये सब प्रचुर मात्रा में मनुष्य के उपयोग के लिए उपलब्ध रहें। ऐसे कई तरीके हैं जिससे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। यहां कुछ ऐसे ही तरीकों का विस्तृतवर्णन किया गया है जिससे मानव जीवन को बड़ा लाभ हो सकता है।

पृथ्वी के पास हर इंसान की जरूरत पूरी करने के लिए काफी कुछ है, लेकिन उसके लालच को पूरा करने के लिए नहीं हैं। पृथ्वी पर पानी, हवा, मिट्टी, खनिज, पेड़, जानवर, पौधे आदि हर किस्म की जरूरत के लिए संसाधन है। लेकिन औद्योगिक विकास की होड़ में हम पृथ्वी को सफाई और उसके ही स्वास्थ्य को नजर अंदाज करने लगे हैं।

हम कुछ भी करने से पहले यह बिलकुल नहीं सोचते कि हमारी उस गति विधि से प्रकृति को कितना नकुसान होगा। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है।

इनमें मुख्यतः पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

मनुष्य का प्रकृति से अटूट सम्बंध है। प्रकृति की रक्षा, उसके संरक्षण और विलुप्ति की कगार पर पहुंच रहे जीव-जंतु तथा वनस्पति की रक्षा का संकल्प प्रत्येक मानव का है। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है। इनमें मुख्यतः पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय समय पर प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ खिलवाड़ होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमें शुद्ध पानी, हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध पर्यावरण, वातवरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा।

हमारा शरीर प्रकृति के पांच तत्वों से मिल कर बना है। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तथा उससे अपनापन रखते हैं तो प्रकृति भी हमारे शरीर की रक्षा करेगी। हम अनेक प्रकार की बीमारियों से बचे रहेंगे। प्रकृति का संरक्षण मानव जाति का संरक्षण है क्योंकि ये प्राकृतिक तत्व ही हैं जो हमें जीवन देते हैं। ऐसे में यह समाज के हर व्यक्ति का दायित्व है कि वह अपने आसपास के प्रकृतिक संसाधनों की रक्षा करे।

**बालमुकुन्द ओझा,**
**अतिथि संपादक,**
**वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार।**

# राजस्थान का युवा केंद्रित विकास मॉडल - अवसर, विश्वास और सशक्त भविष्य

सुरभि मिश्रा

वसंत पंचमी एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के पावन अवसर पर राज्य सरकार द्वारा युवाओं के लिए की गई घोषणाएं राजस्थान के दीर्घकालिक और समावेशी विकास की दिशा में एक स्पष्ट नीतिगत संकेत प्रस्तुत करती हैं। इस अवसर पर 1,000 करोड़ रूपये से अधिक की विभिन्न योजनागत सौगातों के माध्यम से यह प्रतिपादित किया गया है कि राज्य की विकास नीति का केंद्र उसका युवा वर्ग है और सरकार युवाओं को केवल भविष्य की आशा नहीं, बल्कि वर्तमान की सबसे बड़ी शक्ति मानती है। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार यह विश्वास रखती है कि शिक्षा, कौशल, रोजगार और उद्यिमता के अवसरों से युक्त युवा ही सशक्त राजस्थान की आधारशिला बन सकता है। इसी दृष्टिकोण के अनुरूप शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, रोजगार, स्वरोजगार और कौशल विकास के क्षेत्रों में समन्वित एवं परिणामोन्मुखी निर्णय लिए गए हैं, ताकि युवाओं को आत्मनिर्भर, सक्षम और प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके।

शिक्षा और छात्र कल्याण को प्राथमिकता देते हुए राज्य सरकार ने विद्यार्थियों के हित में 300 करोड़ रूपये से अधिक की राशि विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सीधे हस्तांतरित की है। इसके अंतर्गत 3 लाख विद्यार्थियों को 126.81 करोड़ रूपये का प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, 3.34 लाख विद्यार्थियों को 130 करोड़ रूपये की लागत से निःशुल्क साइकिल वितरण तथा 4.40 लाख विद्यार्थियों को 53 करोड़ रूपये की राशि का डायरेक्ट ट्रांसफर सुनिश्चित किया गया है।इन पहलों से न केवल शिक्षा से जुड़ा आर्थिक बोझ कम हुआ है, बल्कि विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति निरंतरता और आत्मविश्वास भी सुदृढ़ हुआ है।

राज्य सरकार शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित नहीं मानती, बल्कि उसे संस्कार, अनुशासन और सामाजिक चेतना से जोड़ने पर भी बल देती है। इसी क्रम में 75 लाख विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक सरस्वती वंदन जैसे आयोजनों के माध्यम से शिक्षा के सांस्कृतिक और नैतिक पक्ष को सशक्त किया गया है। साथ ही, युवा संवाद तथा अभिभावक-शिक्षक संवाद जैसे कार्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि नीतियों का निर्माण जमीनी अनुभवों और सुझावों के आधार पर हो। युवाओं की प्रगति के लिए पारिवारिक सामाजिक सुरक्षा को एक महत्वपूर्ण आधार मानते हुए राज्य सरकार ने 700 करोड़ रूपये की सामाजिक सुरक्षा पेंशन राशि का हस्तांतरण किया है। इससे कमजोर वर्गों को आर्थिक संबल मिला है और युवाओं पर पारिवारिक दायित्वों का दबाव कम हुआ है, जिससे वे अपने शैक्षिणक, व्यावसायिक और कौशल विकास के लक्ष्यों पर अधिक एकाग्रता के साथ आगे बढ़ पा रहे हैं।

रोजगार के क्षेत्र में राज्य सरकार ने पारदर्शिता और समयबद्धता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। एक लाख से अधिक सरकारी पदों पर नियुक्तियां की जा चुकी हैं तथा आगामी एक लाख पदों के लिए भर्ती परीक्षाओं का कैलेंडर जारी किया गया है। इससे युवाओं में यह विश्वास सुदृढ़ हुआ है कि चयन प्रक्रिया निष्पक्ष, स्पष्ट और समयबद्ध होगी। इसके साथ ही सरकार यह भी स्वीकार करती है कि बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में केवल सरकारी नौकरी ही रोजगार का एकमात्र माध्यम नहीं हो सकती। इसी सोच के साथ युवा नीति-2026 और रोजगार नीति-2026 को लागू किया गया है। इनके अंतर्गत निजी क्षेत्र, स्टार्टअप, सेवा उद्योग, तकनीक आधारित रोजगार और डिजिटल प्लेटफॉर्म को समान महत्व दिया गया है। इन नीतियों का लक्ष्य मार्च 2029 तक 15 लाख रोजगार अवसरों का सृजन करना है। स्वरोजगार और उद्यिमता को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना-2026 को प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है। इसके तहत 1 लाख युवाओं को 10 लाख रूपये तक का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। शैक्षिणक योग्यता के अनुसार सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों में अलग-अलग ऋण सीमाएं निर्धारित की गई हैं। इससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के युवाओं को समान अवसर प्राप्त हो रहे हैं। यह पहल युवाओं को रोजगार चाहने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाला बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

राज्य सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि युवा केवल शैक्षिणक रूप से ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी सक्षम हों। इसी उद्देश्य से बड़े पैमाने पर कौशल विकास कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, जिनके माध्यम से युवाओं को तकनीकी, व्यावसायिक और डिजिटल दक्षताओं से जोड़ा जा रहा है। यह प्रयास स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन, पलायन को रोकने और क्षेत्रीय संतुलन स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। राजस्थान आज एक ऐसे चरण में है, जहां उसकी युवा शक्ति राज्य के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को नई दिशा देने की क्षमता रखती है। शिक्षा, रोजगार, स्वरोजगार और कौशल विकास के चार स्तंभों पर आधारित यह युवा-केंद्रित विकास मॉडल राज्य को सशक्त, समावेशी और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में निर्णायक सिद्ध हो रहा है। राज्य सरकार का सतत प्रयास है कि युवा केवल योजनाओं के लाभार्थी न रहें, बल्कि राजस्थान के विकास में सक्रिय सहभागी बनें। निरंतरता, पारदर्शिता और प्रतिबद्धता के साथ यह दृष्टिकोण आने वाले वर्षों में राज्य के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत आधारशिला सिद्ध होगा।

**सुरभि मिश्रा**
**अंतरराष्ट्रीय स्क्वैश खिलाड़ी**

# विधानमंडलों में एआई : सुविधा के साथ सावधानी भी

डॉ. कैलाश चन्द सैनी

डिजिटल परिवर्तन के इस दौर में कृत्रिम मेधा (एआई) लोकतांत्रिक संस्थाओं के कामकाज को अधिक तेज़, सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाने का सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। किंतु सुविधा की इस चमक के पीछे सावधानी का सवाल भी उतना ही महत्वपूर्ण है। विधानमंडलों के संदर्भ में एआई का उपयोग केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित न रहकर संवैधानिक विवेक, मानवीय संवेदना और उत्तरदायित्व की कसौटी पर भी परखा जाना आवश्यक है। यहां इसी संतुलन की पड़ताल का प्रयास किया गया है जिससे तकनीक लोकतंत्र की सहायक बने, उसका विकल्प नहीं।

डिजिटल युग में लोकतंत्र के भविष्य को लेकर हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल देशों के स्पीकर्स और पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन (सीएसपीओसी) का यह संदेश स्पष्ट और दूरगामी रहा कि 'तकनीक लोकतंत्र को सक्षम बना सकती है, किंतु वह मानवीय विवेक का स्थान नहीं ले सकती। 16 जनवरी 2026 को सम्मेलन के समापन सत्र में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला एवं राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश द्वारा व्यक्त इस साझा अभिमत ने यह रेखांकित किया कि कृत्रिम मेधा (एआई) अब केवल प्रशासनिक सुविधा नहीं रही, बल्कि नीति निर्माण और विधायी प्रक्रियाओं को प्रभावित करने वाली एक निर्णायक शक्ति बन चुकी है। ऐसे समय में जब विश्व के 127 से अधिक देशों में एआई के नियमन पर गंभीर बहस चल रही है, भारत और उसके राज्य विधानमंडलों के लिए यह प्रश्न और भी प्रासंगिक हो जाता है कि तकनीक को कितनी छूट दी जाए और विवेक की सीमाएँ कहाँ खींची जाए।

लोकतंत्र का मूल स्वभाव मानवीय है। संसद और विधानसभाएँ केवल कानून बनाने वाले संस्थान नहीं, बल्कि समाज की चेतना, संवेदना और विविधताओं की अभिव्यक्ति का मंच हैं। एआ इस व्यवस्था में गति, दक्षता और पारदर्शिता ला सकता है, परंतु यदि सावधानी का संतुलन टूटे तो यही सुविधा लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए चुनौती भी बन सकती है।

विधायी कार्यों में एआई : विधायी प्रक्रियाओं में शोध, दस्तावेज़ीकरण और सूचना-संसाधन की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। एआई हजारों पृष्ठों के विधेयकों, नियमावलियों, न्यायिक निर्णयों और अंतरराष्ट्रीय उदाहरणों का त्वरित विश्लेषण कर सकता है। भारतीय संसद में इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जहाँ लगभग 48,000 तकनीकी शब्दों वाले 'संसदीय शब्दावली' के शब्दकोश को एक विशेष एआई मॉडल के साथ जोड़ा गया है। यह शोध की प्रक्रिया को न केवल तेज़ बल्कि त्रुटिरहित बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

कानून के प्रारूपण में भी एआई सहायक सिद्ध हो सकता है। विशेषकर भाषा की स्पष्टता, संदर्भों की संगति और मौजूदा कानूनों से टकराव की पहचान जैसे कार्यों में। बहुभाषी भारत में 22 भारतीय भाषाओं में संसदीय दस्तावेजों के अनुवाद और बहसों के विश्लेषण के लिए इसका उपयोग शुरू हो चुका है। कोई भी नागरिक अपनी मातृभाषा में सदन की कार्यवाही का सटीक और तात्कालिक अनुवाद सहजता से देख सकता है। इसे लोकतंत्र का वास्तविक सशक्तीकरण ही कहा जायेगा।

**राजस्थान विधानसभा: डिजिटल प्रयोग और यथार्थ**

राजस्थान विधानसभा के लिए यह विमर्श विशेष महत्व रखता है। हाल के वर्षों में विधानसभा ने 'नेशनल -विधान एप्लिकेशन' (नेवा) के माध्यम से काग़ज़ रहित कार्यवाही, प्रश्नोत्तर, विधेयकों और समितियों के दस्तावेज़ों को डिजिटल मंच पर लाने की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। प्रश्नों की ऑनलाइन प्रक्रिया, सदन की कार्यवाही का डिजिटल अभिलेखन और विधायकों को टैब आधारित सूचनाएँ उपलब्ध कराना ये समस्त कदम दक्षता बढ़ाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण एवं सराहनीय हैं।

हाल के वर्षों में राजस्थान विधानसभा यह चिंता जता चुकी है कि तुच्छ या दोहराव वाले प्रश्न संसदीय समय और ऊर्जा को नष्ट करते हैं। एआ यहाँ एक सहायक बन सकता है लेकिन यह तय करना कि को प्रश्न तुच्छ है या जनहित से जुड़ा, यह निर्णय अंततः जनप्रतिनिधि का ही होना चाहिए, मशीन का नहीं।

राजस्थान का सामाजिक और भौगोलिक परिदृश्य यह भी दर्शाता है कि नीति-निर्माण केवल आँकड़ों से संभव नहीं। मरुस्थलीय क्षेत्रों की जल-समस्या, सीमावर्ती जिलों की सुरक्षा-संवेदनशीलता, किसानों और पशुपालकों की आजीविका इन सबकी पीड़ा किसी मशीनी गणना (एल्गोरिद्म) के पूर्णतः समझ में नहीं आ सकती। एआ आँकड़े दे सकता है, रुझान बता सकता है, पर ज़मीनी सच्चा को आत्मसात करने का विवेक केवल निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के पास होता है। इसलिए राजस्थान विधानसभा में एआ की भूमिका सहायक तक सीमित रहना ही लोकतांत्रिक दृष्टि से उचित है।

वैश्विक स्तर पर विधायी क्षेत्र में एआ का हस्तक्षेप तेज़ी से बढ़ा है। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2016 से 2023 के बीच दुनिया भर की संसदों में एआ से संबंधित 123 विधेयक पारित किए गए। वर्तमान में संसदें स्वयं को कागज़ आधारित संगठनों से बदलकर डेटा संचालित संस्थाओं में रूपांतरित कर रही हैं। एस्तोनिया में स्वचालित स्टेनोग्राफी, इटली में दस्तावेजों का मशीनी अनुवाद और ब्राजील में नागरिकों की टिप्पणियों का वर्गीकरण इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। ये उपकरण न केवल समय बचाने में सक्षम हैं, बल्कि विधायी कर्मचारियों को अधिक जटिल और विश्लेषणात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की सुविधा भी देते हैं।

**नवाचार, संयम और संस्थागत ज्ञान** : विधायिका में एआई को अपनाने का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत नवाचार और संयम का संतुलन है। अनियंत्रित नवाचार जहाँ गलत सूचना या मशीनी पक्षपात का जोखिम बढ़ाता है, वहीं अत्यधिक संयम संस्थागत जड़ता का कारण बन सकता है। यदि तकनीक के डर से उसे पूरी तरह नकार दिया जाए, तो लोकतांत्रिक संस्थाएं आधुनिक चुनौतियों का सामना करने में पिछड़ जाएंगी। अतः एआई का उपयोग हमेशा संदर्भपरक और नैतिक होना चाहिए। वेस्टमिंस्टर फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के दिशा-निर्देश भी इसी चरणबद्ध दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं, जहाँ किसी भी तकनीक को पहले नियंत्रित वातावरण में परखना अनिवार्य है।

एआई के पास सूचनाओं का ढेर हो सकता है, लेकिन संस्थागत ज्ञान और संवेदना केवल मनुष्यों के पास होती है। भारतीय संसदीय प्रयासों में तकनीकी सहायता के बावजूद, अंतिम नियंत्रण हमेशा मानवीय विशेषज्ञों के हाथ में रखा गया है। लोकतंत्र केवल आंकड़ों से नहीं, बल्कि वर्षों के अनुभव और जवाबदेही से संचालित होता है। एक मशीनी गणना यह तो बता सकती है कि स्वास्थ्य बजट में कितनी वृद्धि हुई, लेकिन वह किसी सुदूर गाँव के अस्पताल की ज़मीनी पीड़ा और वहाँ की मानवीय संवेदना को नहीं समझ सकती।

यह विवेक केवल निर्वाचित जनप्रतिनिधि के पास ही सुरक्षित रहता है। भारत की एआई पहल का मुख्य उद्देश्य नागरिकों की समस्याओं को गहराई से समझना और कार्यप्रणाली को 'तेज़' के साथ-साथ 'विश्वसनीय' बनाना भी है।

तकनीक साधन है, समाधान नहीं

एआई लोकतंत्र का विकल्प नहीं, बल्कि एक साधन है। यह विधायकों और विधानसभा कर्मियों का बोझ कम कर सकता है, शोध को सुदृढ़ कर सकता है और पारदर्शिता बढ़ा सकता है। किंतु वह विवेक, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। लोकतंत्र को मशीनी तंत्र नहीं, बल्कि एक जीवंत मानवीय व्यवस्था है। संसद और विधानसभाओं को केवल सुविधाजनक नहीं, बल्कि उत्तरदायी होना चाहिए। यदि तकनीक का उपयोग पारदर्शिता और शोध के लिए किया जाता है, तो यह लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मज़बूत करेगा। लेकिन यदि विवेक को तकनीक के हवाले कर दिया गया तो यह व्यवस्था को भीतर से खोखला कर सकती है।

राजस्थान सहित देश की सभी विधानसभाओं के लिए यह सही समय है कि वे एआई को अपनाएँ, पर आँख मूँदकर नहीं स्पष्ट नियमों, नैतिक मर्यादाओं और मानवीय नियंत्रण के साथ। सुविधा से आगे बढ़ते हुए सावधानी को अनिवार्य बनाना ही लोकतंत्र की रक्षा का समुचित मार्ग है। अंततः यह सत्य सदैव प्रासंगिक रहेगा कि संकट चाहे कितना भी आधुनिक हो, मानवीय धैर्य और मानसिक कौशल ही सबसे अचूक प्रहार सिद्ध होते हैं। विधानमण्डलों के कार्यकरण में एआई को सहायक बनाया जाए निर्णायक नहीं; विश्लेषक बनाया जाए न्यायकर्ता नहीं। तकनीक लोकतंत्र की सेवक बनी रहे, स्वामी नहीं, यही आधुनिक भारत के संसदीय लोकतंत्र की गरिमा का मूल आधार होगा।

**- डॉ. कैलाश चन्द सैनी,**
**वरिष्ठ लेखक।**

# रात में बरसे बादल, सुबह तक गरजे

**बीकानेर,** (निसं)। यहा मौसम एक बार फिर बदल गया है। अब पश्चिमी विक्षोभ के चलते देर रात जहां हल्की बरसात हुई, वहीं सुबह तक बादलों का जमावड़ा बना हुआ है। रात में बादल इतने तेज गरजे की लोगों की नींद ही खुल गई। मौसम विभाग की मानें तो आने वाले दस दिन तक बीकानेर में इसी तरह का मौसम रहेगा। इधर, शादियों का सीजन शुरू हो गया है, ऐसे में लोगों को व्यवस्था की चिंता हो रही है। बीकानेर में देर रात हल्की बूंदाबांदी हुई। लोग सुबह उठे तो सड़कें भीगी हुई नजर आई।

रातभर बादलों के गरजने की आवाज ने परेशान किया। बारिश से मौसम सुहाना हो गया है, वहीं मावठ की इस बारिश से किसान के चेहरे खिले हुए हैं। ये बारिश फसल के लिए फायदेमंद रहेगी। गुरुवार को बारिश पश्चिमी विक्षोभ से हुई हे। अब 26 जनवरी को फिर नया विक्षोभ आ सकता है। इससे भी बारिश होगी। माना जा रहा है कि अब फरवरा के शुरूआती दिनों तक ऐसा ही माहौल रहेगा। फरवरी के पहले सप्ताह में शादियों के आयोजन शुरू हो चुके हैं, जिसमें बारिश के कारण खलल पड़ना शुरू हो गया है। मौसम विभाग के निदेशक राधेश्याम शर्मा का कहना है कि दो विक्षोभ के कारण एक सप्ताह तक मौसम में उतार-चढ़ाव और बदलाव देखने को मिलेगा। फरवरी के पहले सप्ताह से मौसम सामान्य हो जाएगा।

दरअसल दो विक्षोभ कट-टू-कट आ रहे हैं। पहला विक्षोभ गुरुवार से शुरू हो गया,जिसका असर बारिश के रूप में 23 जनवरी को देखने को मिल सकता है। दूसरा विक्षोभ 26 को आएगा। उसका असर 27 तक रहने के आसार हैं। इसलिए शादियों के सीजन में लोगों को सतर्क रहना होगा।

## राशिफल शनिवार 24 जनवरी 2026

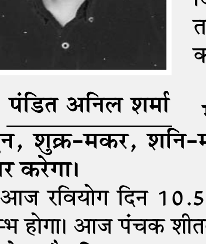

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, शनिवार, विक्रम सम्वत 2082, उत्तरा भाद्रप्रद नक्षत्र दिन 2.16 तक, शिव योग दिन 2.02 तक, कौलव करण दिन 1.13 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मकर, बुध-मकर, गुरु-मिथुन, शुक्र-मकर, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतू-सिंह राशि में संचार करेगा।**

आज रवियोग दिन 10.50 तक है। रवियोग दिन 2.16 से पुनः आरम्भ होगा। आज पंचक शीतलाअष्टमी है।

**श्रेष्ठ चौघडिया** - शुभ 8.40 से 9.59 तक, चट 12.39 से 1.59 तक, लाभ-अमृत 1.59 से 4.38 तक राहुकाल 9.00 से 10.30 तक

सूर्योदय 7.20 सूर्यास्त 5.58

**मेष**
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग-दौड रहेगी।

**वृष**
आर्थिक-व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा सम्भव है।

**मिथुन**
– व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**कर्क**
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे।

**सिंह**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज बनते कार्य बिगड सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है।

**कन्या**
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**तुला**
व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**वृश्चिक**
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**धनु**
घर-परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

**मकर**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कुंभ**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सम्भव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मीन**
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल आत्मविश्वास बडेगा। आवश्यक ओर महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे।